Socialist Planning

समाजवादी नियोजन में निजी क्षेत्र उपस्थिति का अभाव होता है इसमें आज्ञामूलक नियोजन विधि को अपनाया जाता है इसमें एक केन्द्रीय सत्ता होता है जो योजनाओं को पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर निर्देशित एवं कार्यान्वित करती है। समाजवादी नियोजन में संवृद्धि का प्रेरणा स्त्रोत और आधार अर्थव्यवस्था का सार्वजनिक क्षेत्र होता है। समाजवादी नियोजन के निम्नलिखित गुण होते हैं —

1. नियोजन उद्देश्य की समय सीमा में प्राप्ती —

चूंकि समाजवादी नियोजन में आज्ञामूलक नियोजन विधि का उपयोग होता है जिसमें उत्पादन की मात्रा और उत्पाद संरचना का निर्णय राजकीय नीति के अनुसार होता है इसके फलस्वरूप समाजवादी नियोजन के उद्देश्य की प्राप्ती एक निश्चित समयावधि में हो जाती है।

2. उत्पादन के अधिकांश संसाधन राजकीय स्वामित्व में

समाजवादी नियोजन के अन्तर्गत
अधिकांश संसाधन राजकीय स्वामित्व में
होते हैं अतः उत्पादन की समस्त आवश्यकों
और वितरण प्रक्रिया पर सरकारी नियंत्रण
होता है। लाभ की प्रवृत्ति का अभाव
रहता है। सामाजिक कल्याण अधिकतम
करना ही समाजवादी नियोजन का उद्देश्य
होता है।

3. सार्वजनिक क्षेत्र संवृद्धि का प्रेरणा स्रोत एवं आधार -

समाजवादी नियोजन में संवृद्धि का प्रेरणा स्रोत और आधार अर्थव्यवस्था का सार्वजनिक क्षेत्र होता है तथा समस्त उत्पादन संसाधनों एवं आर्थिक क्रियाओं के क्रमबद्धन का कार्य सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा किया जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य सामाजिक कल्याण को अधिकतम करना है। "न लाभ न हानि" मूल्य नीति का अनुसरण सार्वजनिक क्षेत्र करते हैं

4. राष्ट्रीय योजना एक अनिवार्य अनुदेश -

समाजवादी नियोजन के सम्बन्ध में राष्ट्रीय योजना अनिवार्य अनुदेश का प्रतिनिधित्व करती है। राष्ट्रीय योजना के लक्ष्य तथा

Scanned with OKEN Scanner

उसकी वित्तीय व्यवस्था उन आवश्यकताओं को प्रकट करती है।

5. आर्थिक स्थायित्व

समाजवादी नियोजन के अन्तर्गत न तो मुद्रा प्रसार होता है और न ही मुद्रा संकुचन मुद्रा एक सेवक जैसा कार्य करता है तथा आर्थिक स्थायित्व की स्थिति बनी रहती है मुद्रा का कार्य केवल विनिमय का माध्यम रहता है।

समाजवादी नियोजन के कुछ दोष हैं जो निम्नलिखित है —

1. उपभोक्ता को कोई स्वतंत्रता नहीं होती

समाजवादी नियोजन के अन्तर्गत उपभोक्ता को कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। उसे राशनिंग और कीमत नियंत्रण विधि द्वारा ही निश्चित मात्रा में वस्तुएँ प्राप्त होती है। वस्तुओं के आयात - निर्यात पर भी प्रतिबन्ध लगी रहती है।

2. अपरिवर्त्य नियोजन (Rigid Planning)

समाजवादी नियोजन एक अपरिवर्त्य नियोजन होता है क्योंकि इसमें एक केन्द्रीय सत्ता होती है जो योजनाओं को पूर्व निर्धारित

उद्देश्यों के आधार पर कार्यान्वित करती है। प्राकृतिक या आकस्मिक घटना होने पर भी पूर्व निर्धारित उद्देश्यों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

3. प्रजातंत्र के लिए उपयुक्त नहीं

समाजवादी नियोजन प्रजातंत्र पर आधारित अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त नहीं होता है क्योंकि इसमें व्यक्ति को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं रहती है। व्यक्ति को निजी सम्पत्ति का अधिकार नहीं रहता और न ही उत्तराधिकार का अधिकार रहता है। उपभोक्ता को भी कोई स्वतंत्रता नहीं रहती है। इसलिए समाजवादी नियोजन साम्यवादी देशों में ही लागू किया जा सकते है।

4. सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यकुशलता में कमी -

समाजवादी नियोजन में सार्वजनिक क्षेत्र को अत्यधिक महत्व दिया जाता है किन्तु प्रतियोगिता के अभाव में सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यकुशलता में कमी आ जाती है।

सार्वजनिक क्षेत्र की असफलता अन्त में समाजवादी नियोजन की असफलता का कारण बनती है।

यद्यपि पूंजीवादी नियोजन एवं समाजवादी नियोजन दोनों ही प्रकार के नियोजन के कुछ गुण एवं दोष है परन्तु व्यवहार में दोनों का समन्वित रूप ही अधिक लाभकारी सिद्ध होता है। भारतीय नियोजन प्रक्रिया में इन दोनों का प्रयास किया गया है क्योंकि भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र दोनों साथ साथ कार्य करते हैं। निजी क्षेत्र के लिए पूंजीवादी नियोजन को लागू किया गया जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के लिए समाजवादी नियोजन को लागू किया गया।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics

Scanned with OKEN Scanner